भारत निर्वाचन आयोग
ELECTION COMMISSION OF INDIA

मई 2024
मूल्य : 10.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

एक भारत, श्रेष्ठ भारत, विकसित भारत, समृद्ध शक्तिशाली भारत एवं सुरक्षित संपन्न भारत के लिए शत प्रतिशत राष्ट्रहित में मतदान करें, लोकतंत्र का महापर्व उत्साह पूर्वक महान भारत के लिए मनाए।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मई 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 12
•••
ज्येष्ठ
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

हम सभी भारतवासी अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि हम विश्व के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश के निवासी हैं। हम अपनी सरकार स्वयं चुनते हैं। हमारे यहाँ प्रत्येक पाँच वर्ष में लोकसभा के निर्वाचन होते हैं। इसके अलावा भी राज्यों की विधानसभा और स्थानीय निकायों के चुनाव भी निश्चित अंतराल के बाद होते हैं। इसमें हम सभी को मतदान का अधिकार प्राप्त है। हम सभी देश के जिम्मेदार नागरिक हैं। अतः हमें अपने मताधिकार का उपयोग गंभीरता के साथ करना चाहिये। मतदान करते समय राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानकर मतदान अवश्य करना चाहिए। बगैर किसी डर के निर्भय होकर मतदान करना चाहिए, हमारा एक मत राष्ट्र की दशा और दिशा तय करता है। बड़े चुनावी वादों और प्रलोभन में आकर अपने राष्ट्र-हित के विचार को भी भूलना नहीं चाहिये। विश्व पटल पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा और गौरव को जगाने वाले कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए देशभक्ति से भरे हुए समर्पित मन से अपने मतदान का उपयोग राष्ट्र के उज्वल भविष्य के लिए करना चाहिये।

हम स्वयं तो मतदान करें ही, साथ ही अपने से संपर्क रखने वाले लोगों को भी मतदान का महत्व समझाते हुए उन्हें भी मतदान के लिए प्रेरित अवश्य करें। अपने मतदान केन्द्र पर शत प्रतिशत मतदान हो ऐसे प्रयत्न अवश्य करें। निर्वाचन आयोग द्वारा भी अधिक से अधिक मतदान हो इस दिशा में भरसक प्रयास किए जाते हैं। मतदान करना हमारा अधिकार तो है ही यह हमारा राष्ट्रहित में पुनीत कर्तव्य भी है। हमे ऐसे दल या व्यक्ति का चयन करना चाहिये जो इस देश को एक स्थिर और मजबूत सरकार दे सके तथा जिसके पास इस देश के उज्वल भविष्य की योजना हो। ऐसी सरकार हो जो हमारे गौरवभाव का जागरण कर इस राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बना सके। जो सबको साथ लेकर सभी का समान रूप से विकास कर सके और अपने प्रयासों से सभी का विश्वास जीत सके। और ऐसा तभी संभव है जब हम पूर्ण बहुमत के साथ किसी एक विचारधारा के दल का चयन करेंगे और सौ प्रतिशत मतदान करेंगे।

लोकतंत्र का पर्व है, इस पर हमको गर्व है।
भारतमाता का ध्यान धरें, शत प्रतिशत मतदान करें।।

दो दशकों से बदलता हुआ भारत

अनव रघुवंशी

2024 इक्कीसवीं सदीं का चौबीसवीं साल, गुजश्ता 24 साल आज के भारत की नींव का एक अनूठा हिस्सा है। 2004-2014 और 2014-2024 मे भारत दो अलग-अलग सत्ताओ के हाथों में था । आर्थिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, विदेश नीती आदि बहुआयामी विकास की गति में भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा 2008 में वैश्विक आर्थिक मंदी, 2020 में कोरोना महामारी जिसमें प्रमुख स्थान पर है। आइए समझते कैसे 2004 से 2014 और 14 से 24 ये दो दशकों में भारत की विकास यात्रा में क्या क्या बढ़ोत्तरी, ना नुकसान और परिवर्तन आए है।

भारतीय अर्थव्यवस्था

❖ 2004 से 2014 और 2014 से 2024 के बीच, भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापारिक और सामाजिक परिवर्तन आए है। पिछले दशक में विकास का तेजी से क्रम था, जबकि दूसरे दशक में कई नीतियों और तकनीकी उपलब्धताओं ने आर्थिक परिदृश्य को पुनर्सरचित किया।

❖ 2004 से 2014 तक की अवधि में, भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से विकास हुआ निवेशकों का भारत में रुझान बढ़ा, जिसने अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। इस समय भारतीय अर्थव्यवस्था प्रतिवर्ष 7.74 प्रतिशत की दर से बढ़ रही थी । 2008 के वैश्विक वित्तीय सकंट के दौरान, अर्थव्यवस्था को हल्की मंदी का सामना करना पड़ा। बाद के वर्षों में आर्थिक विकास पुनर्जीवत हुआ । इस समय सरकार की सबसे बड़ी चुनौती मंहगाई रही।

❖ 2014 के बाद की अवधि में भारत के आर्थिक मंदी पर कई नए चुनौतिया आई। नोटबंदी और जीएसटी के दोहरे झटके का मतलब है कि देश की विकास दर 2017 और 2018 में क्रमशः 6.8 और 6.5 प्रतिशत रही । महामारी से प्रेरित लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था पर और अधिक कहर बरपाया और अर्थव्यवस्था में 5.8 प्रतिशत की ऐतिहासिक गिरावट देखी गई। हाँलाकि देश ने 2021 में 9.1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वापसी की। वर्तमान में, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।

❖ औसतन देखें तो मनमोहन सिंह के कार्यकाल में मुद्रास्फीति दर 7.5 प्रतिश्त रही। कईयों का मानना ये भी है कि इनके अधिकांश कार्यकाल में तेल की कीमतें कम रही, जबकि कांग्रेस के कार्यकाल के दौरान इसी वजह से महंगाई और बजट घाटा अधिक था।

❖ वित्तीय घाटा - 2004 -2014 में जीडीपी का औसत वित्तीय घाटा 4.3प्रतिशत था 2014 के बाद में जीडीपी का औसत वित्तीय घाटा 3.7 प्रतिशत था। हाँलाकि कोविड काल के बाद से यह इस वर्ष 6.4 प्रतिशत रहा है।

❖ बात अगर विदेशी कर्ज की करे तो भारत की विदेशी कर्ज मार्च 2014 में 440.6 बिलियन डॉलर से बढ़कर मार्च 2023 में 613 बिलियन डॉलर तक तक बढ़ गया।

❖ व्यापार करने की सुगमता सूचकांक में भारत की रैंक 2004 में 132 से बढकर 2014 में 134 हो गई थी और 2022 में भारत की रैंक 63 हो गई है।

❖ 2004 से 2014 के दौरान भारत का निर्यात करीब साढ़े तीन गुना बढ़कर 80 अरब डॉलर से 300 अरब डॉलर तक हो गया।

❖ जबकि बीते 10 सालों में निर्यात वृद्धि दर डेढ़ गुना तक रही , यानी 300 अरब डॉलर से लेकर 437 अरब डॉलर तक।

जन कल्याण योजनाएं 2004 -2014

* महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम(मनरेगा) के तहत साल भर में 100 दिनों का रोजगार और हर दिन 100 रुपये न्यनूतम मजदुरी तय की गई। यह योजना 2 फरवरी 2006 को 200 जिलों में शुरू की गई, इस योजना के लिए 2018-19 में 61,084 करोड़ रुपये आवंटित किए गए है।

❖ **खाद्य सुरक्षा कानून** - इस स्कीम के तहर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में 75 फीसदी तक और शहरी क्षेत्रों की 50 फीसदी तक की आबादी को सस्ती दरों पर अनाज उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया।

❖ 2013 को सब्सिडी को गलत हाथों में जाने से बचाने के लिए डायरेक्ट वेनेफिट स्कीम की शुरूआत की थी। इसका मुख्य लक्ष्य पारदर्शिता बढ़ाते हुए सब्सिडी वितरण में होने वाली धाधलियों का रोकना था।

❖ 2005 में देश की संसद ने एक कानून पारित किया जिसे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के नाम से जाना जाता है। इस अधिनियम में व्यवस्था की गई है कि किस प्रकार नागरिक सरकार से सूचना मांगेगे और किस प्रकार सरकार जवाबदेह होगी।

जन कल्याण योजनाएं 2014 -2024

❖ **स्वच्छ भारत योजना** - स्वच्छ भारत अभियान के तहत 2 अक्टूबर 2019 तक देशभर में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण कराकर खुले में शौच मुक्त भारत का लक्ष्य रखा गया है।

❖ **जनधन योजना**- इसका उद्देश्य है कि देशभर में सभी परिवारों

को बैंकिग सुविधाएं मुहैया कराई जाएं। पीएमजेडी में खाता खुल जाने से डायरेक्ट बेनिफिट स्कीम का फायदा आज हर परिवार को मिल रहा है।

❖ **आयुष्मान भारत**- इस योजना के तहत गरबी रेखा से नीचे (बीपीएल) आने वाले परिवारों को 5 लाख रुपये तक का नकदी रहित (कैशलेस) स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जा रहा है।

❖ **उज्जज्जवला योजना** - इस योजना के अंतर्गत गरीब महिलाओं को मुफ्त में एलपीजी गैस कनेक्शन देने का प्रावधान है।

भारत के अंतर्राष्ट्रिय संबंधों का विकास 2004-2014 और 2014-2024

❖ **2004-2014**- इस अवधि के दौरान, कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यपीए) सरकार के नेतृत्व में भारत ने अपनी विदेशी नीति के दृष्टिकोण में एक उल्लेखनीय बदलाव देखा।

❖ **परमाणु समझौता**- 2008 में हस्ताक्षरित ऐतिहासिक भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता भारत के विदेशी संबंधों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ घनिष्ठ रणनीतिक साझेदारी का प्रतीक है ।

❖ **क्षेत्रीय जुड़ाव** - भारत ने नेबरहुड फर्स्ट पॉलीसी जैसी पहलों के माध्यम से दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की, जिसका उद्देश्य पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देना है।

❖ **आर्थिक कूटनीति**- इस अवधि में आर्थिक कूटनीति के प्रयासों में वृद्धि देखी गई, भारत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और विदेशी निवेश को आकृर्षित करने के लिए व्यापार समझौतों और बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय रूप से शामिल हुआ।

❖ **2014-2024**- 2014 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पाटी (भाजपा) के सत्ता में आने के साथ, भारत की विदेश नीति में और आर्थिक विकास हुआ, जो अधिक मुखर और सक्रिय दृष्टिकोण विशेषता थी। प्रमुख विकासों में शामिल-

1. एक्ट ईस्ट पॉलिसी- लुक ईस्ट पॉलिसी को आगे बढ़ाते हुए, मोदी सरकार ने आर्थिक सहयोग, कनेक्टिविटी और रणनीतिक साझेदारी पर जोर देते हुए दक्षिण पूर्व एशिया, जापान और दक्षिण कोरिया के साथ भारत की भागीदार को फिर से मजबूत किया।

2. संतुलन अधिनियम - भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों के बीच अपने संबंधों को संतुलित करने, आपसी हित के क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों का पीछा करते हुए रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने की मांग की।

3. वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षाएँ - भारत वैश्विक शासन संरचनाओं में एक बढ़ी भूमिका की आकांक्षा रखता है, संयुक्त राष्ट्र – सुरक्षा परिषद जैसे संस्थानों में सुधारों की वकालत करता है और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतर्राष्ट्रिय सौर गठबंधन जैसी पहल में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

रक्षा प्रौद्योगिकी का विकास

❖ एक अच्छी तरह से सुसज्जित और आधुनिक सशस्त्र बल विकसित करने की अत्याधिक महत्वाकांक्षी योजना ने भारत को 2004 से 2014 तक अपने रक्षा बजट में लगभग 164.5 प्रतिशत की वृद्धि करने के लिए मजबूत किया है। इतनी बड़ी बजटीय वृद्धि के बावजूद भारत अपने स्वदेशी रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने में विफल रहा है। प्रमुख घटनाक्रमों में भारत की पहली स्वदेशी परमाणु संचालित पनडुब्बी आईएनएस अरिहंत का सफल शामिल होना शामिल है। इसके अतिरिक्त, अग्नि श्रृखंला मिसाईलों के सफल परिक्षण और रूस के सहयोग से ब्रह्मोस सुपर सैनिक क्रूज मिसाइल के विकास के साथ मिसाइल प्रौद्योगिकी में प्रगति प्रमुख थी।

रक्षा का स्वदेशीकरण (2014 -2024)

❖ मेक इन इंडिया अभियान से निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी हुई, नवाचार और स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा मिला। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी), उन्नत इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणाली और बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणाली सहित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निगरानी और संचार उद्देश्यों के लिए समर्पित सैन्य उपगृहों के सफल प्रक्षेपण के साथ, भारत ने अंतरिक्ष-आधारित रक्षा क्षमताओं में भी प्रगति की है।

स्वास्थ्य देखभाल

❖ 2004-2014 की अवधि के दौरान, भारत सरकार ने देशभर में स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच और गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से कई सुधार लागू किए।

❖ 2005 में शुरू किया गया राष्ट्रिय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) एक ऐतिहासिक पहल थी जो ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढ़ाचें को मजबूत करने, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करने और स्वास्थ्य सेवा वितरण में क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने पर केंद्रित थी।

❖ 2008 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना (आरएसबीवाई) की शुरूआत का उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करना था, जिससे जेब से स्वास्थ्य देखभाल व्यय कम हो और वित्तीय जोखिम सुरक्षा में सुधार हो सके।

❖ 2018 में आयुष्मान भारत योजना की शुरूआत, जिसमें दो प्रमुख घटक शामिल है - स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र (एचडब्ल्यूसी) और प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई), सभी के लिए

सुलभ और किफायती स्वास्थ्य देखभाल की दिशा में भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई।

❖ पीएमजेएवाए का लक्ष्य 500 मिलियन से अधिक कमजोर व्यक्तियों को स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करना है, जिससे यह दुनिया का सबसे सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ सेवा कार्यक्रम बन जाएगा।

शिक्षा और साक्षरता

❖ 2004 से 2014 की अवधि के दौरान, भारत में शैक्षिक बुनियाद ढ़ाचे और पहुंच को बढ़ाने के लिए प्रर्याप्त प्रयास देखे गए। प्रारंभिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के उद्देश्य से सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) जैसी विभिन्न सरकारी पहलों में नामांकन दरों में वृद्धि में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) ने 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा को अनिवार्य कर दिया, जिससे नामांकन के आकड़ों में और वृद्धि हुई।

❖ 2014 से 2024 तक, भारत ने गुणवत्ता, समानता और कौशल विकास पर जोर देने के साथ शिक्षा सुधारों पर अपना ध्यान जारी रखा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जैसी पहल का उद्देश्य 21वीं सदी की मांगों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करना है। डीजिटल इंडिया अभियान ने धीरे-धीरे शहरी -ग्रामीण विभाजन को पाटते हुए, डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच को और आसान बना दिया।

महिला सशक्तिकरण

❖ 2004 से 2014 की अवधि के दौरान नरेगा जैसी पहल ने महिलाओं को बढ़े हुए आर्थिक अवसर प्रदान किए। इसके अतिरिक्त, बेटी- बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान जैसी योजनाओं के कार्यान्वयन का उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को संबोधित करना और महिला शिक्षा को बढ़ावा देना है । कन्या भ्रुण हत्या, लिंग आधारित हिंसा और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक असमान पहुंच जैसे मुद्दे भारत में महिलाओं की प्रगति में बाधा बने हुए है।

❖ 2014-2024 मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 जैसी नीतियों की शुरूआत, जिसने मातृत्व अवकाश को बढ़ाया और क्रेच सुविधाएं प्रदान की, जिसका उद्देश्य कामकाजी महिलाओं का समर्थन करना था। इसके अलावा, स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) जैसी पहल ने स्वच्छता के मुद्दों को संबोधित किया, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य और सम्मान को लाभ हुआ। प्रौद्योगिकी और डिजिटल साक्षरता पहल में प्रगति ने महिलाओं को सशक्त बनाया है, जिससे सूचना, शिक्षा और रोजगार के अवसरों तक पहुंच संभव हो सकी है। विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं की वृद्धि ने लैंगिक समावेशिता और प्रतिनिधित्व की दिशा में एक सकारात्मक बदलाव को भी चिन्हित किया है।

❖ भारत में पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए है, प्रत्येक दशक अपनी चुनौतियों और अवसरों को लेकर आया है। तीव्र आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति से लेकर सामाजिक सुधार और सतत विकास पहल तक, भारत ने विभिन्न मोर्चो पर महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि आय असमानता, पर्यावरणीय और सामाजिक स्थिरता और सामाजिक समावेशन जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं, जिससे राष्ट्र के लिए समृद्ध और समावेशी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए सभी हितधारकों के ठोस प्रयासों की आवश्यकता हैं।

देश में लोकतंत्र का महापर्व

अमन व्यास

देश में लोकतंत्र का महापर्व चल रहा है। प्रति पाँच वर्ष में आने वाले इस उत्सव में सभी भारतीय अपने वोट का उपयोग कर सरकार बनाते हैं। ऐसी सरकार जो हमारी संस्कृति की रक्षा करे, नागरिकों को सुरक्षा दे और देश को प्रगति के रास्ते पर निरंतर आगे बढ़ाये।

अपने मालवा-निमाड़ में 13 मई को मतदान है। इंदौर, उज्जैन, देवास, मंदसौर, रतलाम, धार, खंडवा और खरगोन में इस दिन मतदान होगा। हमें एक भारतीय होने के नाते यह सुनिश्चित करना चाहिये कि एक सशक्त और स्थायी सरकार बनाने में हम अपना भी योगदान दें, ताकि देश के विकास और उन्नति में हमारा भी योगदान हो।

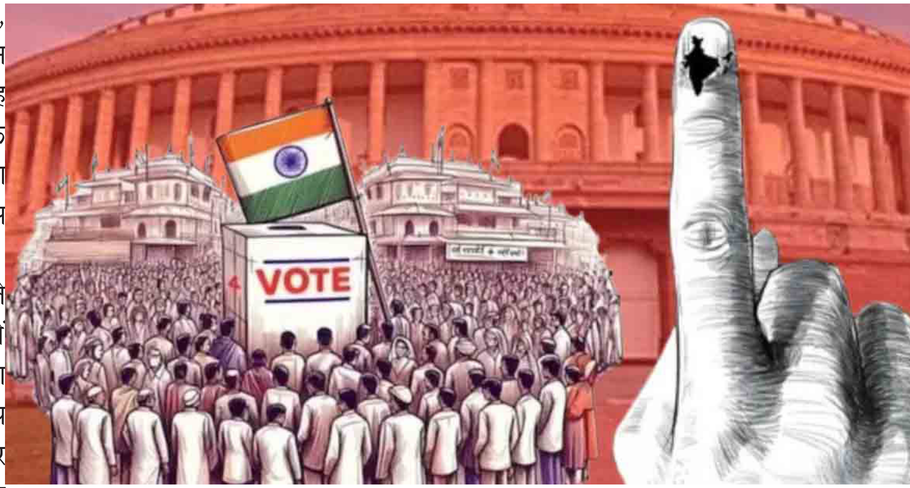

प्रगति पथ पर अग्रसर भारत- पिछले वर्षों में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जब दुनिया के अन्य देशों में अस्थिरता है ऐसे समय में भारत में जनजीवन सामान्य और सुखी है। दुनिया के अनेकों देश कोरोना के पश्चात मंदी की समस्या से निपट नहीं पा रहे हैं, वहीं भारत में आर्थिक स्थिति स्थिर है।

धार्मिक पर्यटन का विकास - गत वर्षों में भारत में धार्मिक पर्यटन का अभूतपूर्व विकास हुआ है। पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक मंदिरों और प्राचीन धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार से धार्मिक पर्यटन का विकास हुआ है तथा देश के बहुसंेयक समाज की आस्था को सम्मान भी मिला है। गुजरात स्थित प्रसिद्ध पावागढ़ शक्तिपीठ से अतिक्रमण को हटाकर परिसर का जीर्णोद्धार किया गया है। 500 वर्षों के पश्चात मंदिर के शिखर पर ध्वज लहराया है। गुजरात में ही स्थित प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ का भी विकास हुआ है।

उत्तरप्रदेश स्थित काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के कॉरिडोर का निर्माण हुआ है, कॉरिडोर के निर्माण से दशकों से उपेक्षित काशी विश्वनाथ का वैभव फिर से लौटा है।

उत्तराखण्ड में आयी बाढ़ के कारण वैभवशून्य हो चुके केदारनाथ और बदरीविशाल धाम पर ऐतिहासिक जीर्णोद्धार कार्य हुए है। साथ ही दुर्गम स्थानों पर स्थित धार्मिक स्थलों चाहे वह केदारनाथ हो, अमरनाथ हो या माता वैष्णोदेवीज.सर्वत्र पहुँचने के लिये संसाधनों का विकास भी हुआ है।

मध्यप्रदेश में महाकाल महालोक के निर्माण के बाद उज्जैन सहित इंदौर और ओंकारेश्वर में धार्मिक पर्यटन का विकास हुआ है।

अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात संपूर्ण विश्व के रामभक्तों की आस्था और श्रद्धा का सम्मान हुआ है।

वैश्विक मंच पर भारत - पिछले एक दशक में भारत की विश्व मंच पर ख्याति बढ़ी है। विश्व के अनेकों देशों में रह रहे भारतीय मूल के नागरिकों की इच्छाओं को ध्यान में रखकर उन देशों की सरकारें नीति बना रही हैं।

विश्व के देशों में जब युद्ध चल रहा है, ऐसी स्थिति में भारतीय विद्यार्थी और नागरिकों की सुरक्षित वतन वापसी के लिए युद्ध रोके गए हैं।

प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, राजदूत इत्यादि भारतीय प्रतिनिधियों का विश्व मंच पर सम्मान हो रहा है।

आज संपूर्ण विश्व योग दिवस मना रहा है। भारत के ही आह्वान पर आतंकवाद को निर्यात करने वाले देश अब दुनिया में अलग-थलग पड़ गये हैं।

जी-20 की अध्यक्षता के एक वर्ष में भारत ने अनेकों कीर्तिमान रचे हैं। संपूर्ण विश्व इस पर भारत की प्रशंसा कर रहा है।

आर्थिक क्षेत्र में उभरता भारत- धार्मिक क्षेत्र के साथ ही भारत आर्थिक क्षेत्र में भी लगातार विकास कर रहा है।

आज अधिकांश भारतीयों के बैंक खाते हैं, साथ ही

यूपीआई का इतने बड़े स्तर पर उपयोग करने वाला देश भी भारत ही है। भारत में चाय की टपरी से कार के शोरूम तक ऑनलाइन पेमेंट की व्यवस्था है।

सरकार के द्वारा भी विभिन्न योजनाओं की राशि अथवा मुआवज़े की राशि सीधे लाभार्थी के अकाउंट में भेजी जाती है, इस कारण भ्रष्टाचार में बड़े स्तर पर कमी आयी है।

देश में आज रिकॉर्ड स्टार्टअप रजिस्टर हो रहे हैं, मुद्रा लोन जैसी व्यवस्थाओं के कारण अपने सपनों का उद्योग करने में युवाओं को सहायता मिल रही है।

रक्षा क्षेत्र तथा क़ानून व्यवस्था - कुछ वर्ष पहले तक देश में बम धमाके और आतंकी हमले आम बात थी। आये दिन देश में धमाके के कारण निर्दोष भारतीयों की जान जाती थी।

लेकिन अब देश में धमाके की आवाज़ नहीं सुनाई देती। क़ानून और व्यवस्था को भंग करने की इच्छा रखने वाले के घर पर बुलडोज़र चलते हैं। गुंडे-बदमाश स्वयं आकर पुलिस थाने में सरेंडर करते हैं।

साथ ही रक्षा क्षेत्र में भी विभिन्न ज़रूरी कदम उठाये जा रहे हैं। सैनिकों और उनके रसद के सुगम आवागमन के लिए नदियों पर पुल का निर्माण किया जा रहा है साथ ही अनेकों सुरंग का निर्माण भी किया जा रहा है। सैनिकों को राफेल और तेजस जैसे आधुनिक युद्ध विमान और विक्रम जैसे युद्धपोत भी दिये जा रहे हैं।

कश्मीर से धारा 370 निष्क्रिय होने के बाद, सैनिकों पर आये दिन होने वाली पत्थरबाज़ी पर भी विराम लगा है।

नक्सली आज आत्मसमर्पण कर रहे हैं।

भविष्य का भारत- आज देश लगातार आर्थिक मापदंड पर आगे बढ़ रहा है, देश विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने के लिए लगातार कार्य रहा है।

देश के युवा, नये-नये प्रयोग कर विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रहे हैं, भारत विश्व का स्टार्टअप हब बनने को तैयार है।

अपनी धार्मिक आस्थाओं को सेमान मिल रहा है, देश के शेष धार्मिक स्थल भी जीर्णोद्धार को तैयार हैं।

देश में वन्दे भारत जैसी आधुनिक ट्रेन चल रही है। रिकॉर्ड सड़क निर्माण हो रहा है।

आज भारत द्रुतगति से प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, एक सच्चे भारतीय के नाते हमारा उद्देश्य है कि हम अपने मत का उपयोग कर एक सशक्त और स्थायी सरकार बनाएं ताकि देश दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करे।

समरसता का सम्बन्ध

पीयूष शर्मा

रतलाम जिले के पिपलोदा नगर में राठोर दंपत्ति ने सामाजिक समरसता की अनूठी मिसाल प्रकट की है। आज से इक्कीस वर्ष पूर्व, ठाकुर श्री भोपाल सिंह राठौर की पत्नी श्रीमती पवन कुंवर, अपने खेत पर घूमने पहुंची थी। वहां काम कर रहे मजदूर प्रभुलाल मीणा की छोटी सी बालिका अनिता को देख कर, श्रीमती पवन कुंवर उसकी मासूमियत पर ऐसी मोहित हुई, की उसके प्रति वे ममत्व के भाव से भर गई। अपने इस भाव को वे दबा नहीं सकीं और अपने पति से अनुमति लेकर, अनिता के पिता से उसे गोद लेने के लिए निवेदन करने जा पहुंची। बालिका के पिता प्रभुलाल जी ने इसे अपनी बच्ची के लिए सौभाग्य माना और उसके उज्वल भविष्य के लिए सहमती दे दी।

उस दिन के बाद से नन्ही अनिता, ठाकुर दंपत्ति की प्राणप्यारी बेटी की तरह बड़ी होने लगी। अपने दो बेटों के साथ ठाकुर दंपत्ति अनिता पर भी अपना स्नेह उड़लने लगे। अनीता की शिक्षा दीक्षा भी उसके दोनों भाई अर्थात ठाकुर दंपत्ति के दोनों बेटों की तरह की गई। रिश्तेदार और आसपास के लोग अब अनिता को **बाई सा होकम** कह कर आदर से पुकारते। देखते ही देखते अनिता की अवस्था विवाह योग्य हो आई। क्षेत्र की प्रतिष्ठित ठाकुर दंपत्ति की पुत्री होने के नाते चारों और से उसके लिए रिश्ते आने लगे। श्री भोपाल सिंह राठोर ने सहृदयता दिखाते हुए अनिता का विवाह उसके पिता श्री प्रभुलाल मीणा की सहमती से मीणा समाज में ही निश्चित किया। अनिता का विवाह पूरी राजपूती ठाठ से किया गया। दो समाजों के बीच यह वैवाहिक प्रसंग, आपसी सद्भाव का उत्सव बन गया। लगभग तीन हजार से अधिक लोग इस विवाह के साक्षी बने, और यह विवाह संपूर्ण क्षेत्र में सामाजिक समरसता का उदाहरण बन गया ।

मतदान कर्तय भी है, नागरिक-धर्म भी

दुर्गेश कुमार साध

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। स्वतंत्रता के पश्चात् राजशाही समाप्त करके लोकशाही की स्थापना की गई थी। कारण स्पष्ट ही था कि लोक से ही देश बनता है और देश में शासन, (हमारे) लोगों का एवं लोगों के लिए ही होना चाहिए। यहाँ जनता ही **'सरकार'** होती है और जनता ही **'प्रजा'**। जनता द्वारा चुनी गई सरकारें देश की जनता की मूल समस्याएँ समझती हैं, जानती हैं और लोगों के कल्याण के फैसले लेकर देश चलाती हैं। मगर देश को सुचारु रुप से चलाने के लिए एक स्थिर और राष्ट्रीय विचारधारा की सरकार का होना अति आवश्यक है। बहुमत न मिलने की स्थिति में हमने मिली-जुली सरकारों को चलते (लड़खड़ाते) एवं उनकी दयनीय दशाएँ देखीं और भोगी हैं। पड़ौसी देशों में कहीं या तो तानाशाही है, या सैनिक शासन अथवा मिली-जुली ऐसी पंगु सरकारें, जो कि कतिपय तत्वों के अधीन होती हैं। इससे नुकसान देश का और अंततः जनता का ही होता है। भारत में अगर सफल लोकतंत्र है, तो इसका सबसे बड़ा कारण यहाँ के बहुसंख्यक हिन्दू हैं, जिनकी सोच में **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की भावना विद्यमान है। हालाँकि यह देश का दुर्भाग्य ही रहा था कि एक राष्ट्रीय विचारधारा की सरकार आने में बहुत समय लग गया। मगर कहते हैं न कि **'जब जागे, तब सवेरा'**... इसलिए हमें सरकारें चुनने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। इसकी मिसाल है - 2014 से केन्द्र की भाजपानीत सरकार, जिसने देश के विकास में कई साहसिक एवं तर्कपूर्ण फैसले लेकर जनता के मन में अपनी स्पष्ट छवि अंकित कर ली है। फिर चाहे वह एयर स्ट्राइक हो या हमारे जॉबाज सिपाही अभिनंदन की पाकिस्तान से सकुशल वापसी या फिर यूक्रेन से भारत लाए गए भारतीय छात्र, इस सरकार पर लोगों का यकीन पक्का है कि - **'मोदी है तो मुमकिन है'**।

भारत की वर्तमान सरकार ने आम जनता की नब्ज़ पकड़ी है एवं जो कार्य पिछली सरकारें नहीं कर सकी थीं एवं जो आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य थे, उन्हें भी पूरा किया। इनमें से कुछ उल्लेखनीय योजनाओं में गरीब महिलाओं के लिए - **'उज्जवला योजना'**, शहरों एवं गॉवों को खुले में शौच से मुक्त बनाने के लिए - **'स्वच्छ भारत मिशन योजना'**, मध्यमवर्गीय परिवारों को घर प्रदान करने के लिए - **'प्रधानमंत्री आवास योजना'**, गरीबों के मुफ्त इलाज की - **'आयुष्मान भारत योजना'**, बैंक खातों के लिए - **'जन-धन योजना'**, लोगों की जीवन-सुरक्षा के लिए - **'प्रधानमंत्री बीमा योजना'**, गरीबों को मुफ्त अनाज देने की - **'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना'**, छोटे व्यवसायियों को ब्याजमुक्त लोन प्रदान करने वाली - **'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना'**, किसानों के लिए **'प्रधानमंत्री किसान निधि सम्मान योजना'**, युवाओं में देशभक्ति जगाकर उन्हें सैनिक बनाने हेतु - **'अग्निवीर'** योजना आदि हैं। इसके अलावा कई साहसिक निर्णय जैसे **'एकल टैक्स' 'जी एस टी'**, काले धन पर रोक के लिए 500 एवं 1000 रुपये के नोटों की **'नोटबंदी'**, जम्मू-कश्मीर से **'धारा-370 की समाप्ति'**, डिजीटल लेन-देन को बढ़ावा देने वाली **'डिजीटल इण्डिया'**, विदेशों से आयात में कमी लाने एवं स्थानीय उत्पादकों एवं घरेलू अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाली **'मेक इन इण्डिया'** को लागू किया गया एवं मुस्लिम महिलाओं का जीवन दूभर करने वाले **'तीन तलाक'** को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया। 2014 के पहले पड़ौसी देशों से भारत आने वाले हिन्दुओं (हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध) को नागरिकता देने वाला कानून **'सीएए'** भी लागू हो चुका है। जहाँ पहले की सरकारें हिन्दुओं की समस्याओं को उपेक्षित करती रही थीं, वहीं वर्तमान सरकार ने हिन्दुओं के अलावा अन्य सभी का बराबर ध्यान रखा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था आज सम्मानीय स्थान पर पहुँच चुकी है। आज हम विश्व में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और इसका श्रेय निःसंदेह वर्तमान सरकार की आर्थिक नीतियों को ही जाता है। 2014 से पहले कोई भी स्टार्ट-अप का नाम तक नहीं जानता था, मगर 2015 से अब तक पोर्टल पर लगभग 95,000 स्टार्ट-अप का रजिस्ट्रेशन हो चुका है और आने वाले समय में आपको कई भारतीय (स्वदेशी) कम्पनियाँ विदेशी कम्पनियों से टक्कर लेती मिलेंगी। आपको आज जगह-जगह पर इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने वाले कार्य प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। 2014 तक नेशनल हाईवे 98,000 किलोमीटर का था, जो कि पिछले 9 सालों में 50,000 किलोमीटर बढ़कर कुल 1,45,000 किलोमीटर का हो चुका है। यानी लगभग 35प्रतिशत हाईवे इन 9 सालों में निर्मित किये गये। कई छोटे एवं मध्यम आकार वाले शहरों से वायुमार्ग सेवा प्रारंभ हो चुकी है। रेलवे की बात करें, तो लगभग 4,000 किलोमीटर की नई लाइन, 5,000 किलोमीटर का गेज कन्वर्जन एवं 18,000 किलोमीटर का विद्युतीकरण किया जा चुका है। इस समय 180 नई रेलवे लाइन परियोजना पर कार्य विभिन्न चरणों में है। स्पष्ट है कि हमारे वोट का कितना महत्व है। सही सरकार चुनना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि नागरिक-धर्म भी है। अतः मतदान वाले दिन घरों से निकलकर अपना मत देकर राष्ट्रीय यज्ञ में आहुति दें। स्वयं भी सही सरकार चुनें एवं अपने आस-पास अन्य सभी को भी राष्ट्रीय हित में मतदान करने के लिए प्रेरित करें।

अनुच्छेद 370 हटाने का पुरुस्कार देने को तैयार है मतदाता

तुषार कोठारी

देश में इन दिनों लोकसभा चुनाव का शोर है और भाजपा समेत सारे राजनीतिक दल चुनाव प्रचार में जुटे हैं। इन चुनावों में जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने का मुद्दा भी सुनाई दे रहा है। कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के मुद्दे पर भाजपा को छोड़कर तमाम राजनीतिक दल चुप्पी साधे हुए हैं। विपक्षी दलों की हालत सांप-छछून्दर वाली हो रही है। यहां तक कि भाजपा के नेता विपक्षी दलों को खुली चुनौती भी दे रहे हैं कि अगर उनमें दम है तो वे कहें कि वे अनुच्छेद 370 फिर से ले आएंगे। भाजपा के हाथों लेते रहे हैं। जब अनुच्छेद 370 को समाप्त किया गया था, तो ये दोनों ही शत्रुदल अपनी शत्रुता भूलकर एक साथ आ गए थे। आपको याद होगा कश्मीर का गुपकार अलायंस या गुपकार गैंग। दोनों ही पारंपरिक शत्रुओं ने कई दिनों तक कश्मीर में अनुच्छेद 370 को वापस लाने की प्रतिज्ञाएं की थी। लेकिन कश्मीर से अनुच्छेद 370 को समाप्त हुए अभी पूरे पांच साल भी नहीं बीते हैं, इन दोनों पार्टियों का 370 वाला राग बन्द हो चुका है। ये दोनों ही दल अब अपना अलायंस तोड़कर अलग-अलग मुकाबले में आ चुके हैं और अनुच्छेद 370 का मुद्दा कहीं गायब हो गया है।

इतना बड़ा चमत्कार हुआ कैसे? अपनी बरसों बरस

रणनीतिकार जानते हैं कि किसी विपक्षी नेता की अब ये ताकत नहीं है कि वे अनुच्छेद 370 को फिर से लाने की बात कह सकें। यहां तक कि कश्मीर के दोनों प्रमुख राजनीतिक दल नेशनल कान्फ्रेन्स और पीडीपी भी अब इस मुद्दे पर मौन साधकर बैठ गए हैं। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है?

नेशनल कान्फ्रेन्स और मेहबूबा मुफ्ती की पीडीपी कश्मीर में परंपरागत प्रतिद्वंदी रहे हैं और बरसों बरस तक एक दूसरे को आड़े की दुश्मनी भूल कर अनुच्छेद 370 के नाम पर साथ आए ये दोनों दल आखरी सांस तक अनुच्छेद 370 की वापसी के लिए लड़ते रहने की बातें करते थे, लेकिन वे अब सब-कुछ भूल चुके हैं और एक-दूसरे से लड़ने को तैयार हो चुके हैं। इस चमत्कार के पीछे का जो रहस्य है वो कश्मीर के बीते पांच सालों में बदली हुई परिस्थितियों का है।

याद कीजिए 5 अगस्त 2019 का वह दिन जब संसद में गृहमंत्री ने अचानक ही कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने की

घोषणा की थी। ये घोषणा पूरे देश के लिए बहुत बड़े आश्चर्य का विषय थी। राष्ट्रवादी विचार वाले लोगों के लिए यह सुखद विषय था तो राष्ट्रविरोधी भावनाएं रखने वालों के लिए बहुत बड़ा झटका था। राष्ट्रवादी विचारों से जुड़े लोगों को कश्मीर से 370 हटने की खुशी तो थी, लेकिन उन्हें कहीं न कहीं ये डर भी सता रहा था कि कहीं कश्मीर में कोई बड़ा बवाल ना हो जाए।

राष्ट्रवादी विचारों के लोगों को महबूबा मुफ्ती और दूसरे नेताओं के वो बयान भी याद थे कि अगर अनुच्छेद 370 के साथ छेड़छाड़ की गई तो कश्मीर में तिरंगे को कोई कन्धा देने वाला नहीं मिलेगा। राष्ट्रविरोधी विचार रखने वालों को भी उम्मीद थी कि कश्मीर के लोग सड़कों पर उतर आएंगे और ऐसा बवाल होगा कि सरकार को छठी का दूध याद आ जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

इन पंक्तियों के लेखक ने अनुच्छेद 370 हटाए जाने के मात्र 35 दिनों के बाद 10 सितम्बर 2019 को कश्मीर की यात्रा की थी। वो मोहर्रम का दिन था, जब इन पंक्तियों का लेखक अपने कुछ मित्रों के साथ लेह से कारगिल द्रास और गुलमर्ग होते हुए श्रीनगर पहुँचा था। श्रीनगर और कश्मीर की स्थिति को लेकर जो खबरें टीवी और अखबारों में बताई जा रही थीं, उनमें यह दिखाया जा रहा था कि वहां के सामान्य लोग सरकार के इस फैसले से बिलकुल भी सहमत नहीं हैं और लोगों में भारी नाराजगी है। इसी के विरोध के चलते लोगों ने अपना कारोबार स्वैच्छिक रुप से बन्द कर रखा है।

इसी तरह के समाचारों के प्रभाव के चलते कश्मीर के भीतरी हिस्सों में जाने में डर सा था। लेकिन लेखक जब श्रीनगर पहुँचा, तो वहां के हालात देखकर सारे भ्रम दूर हो गए। समाचारों में बताया जा रहा था कि लोगों ने नाराजगी के चलते स्वैच्छिक बन्द रखा है। श्रीनगर की दुकानें वैसे तो बन्द दिखाई दे रही थी, लेकिन सभी दुकानों पर शटर को थोड़ा उठाकर कारोबार धड़ल्ले से जारी था। सब्जी, फल, दूध, दवाई, किराना आदि सारे व्यवसाय बड़े आराम से चल रहे थे। इतना ही नहीं सड़कों पर पुरुषों के अलावा महिलाएं, बच्चियाँ और बच्चे सामान्य रूप से दिखाई दे रहे थे। सड़कों पर अर्द्धसैनिक बलों की भारी तैनाती थी, लेकिन सामान्य लोगों के चेहरों पर कहीं कोई तनाव नजर नहीं आ रहा था। श्रीनगर के बाहरी हिस्से से लाल चौक तक घूमने के दौरान ही यह साफ हो गया था कि आम कश्मीरी को अनुच्छेद 370 हटने से कोई नाराजगी नहीं है। लेकिन नेताओं को दिखाने के लिए दिखावे के तौर पर सब-कुछ बन्द रखा जा रहा है।

अनुच्छेद 370 हटाए जाने के कुछ ही दिनों बाद घाटी में सब-कुछ सामान्य होने लगा। इन्ही दिनों में घाटी के राजनैतिक दलों की हैसियत भी सामने आ गई कि आम कश्मीरी लोगों पर उनका कोई प्रभाव नहीं है। ये नेता सिर्फ बयानों में बन्दर-घुड़कियां दे सकते हैं, लेकिन इनके आह्वान पर आम लोग सड़कों पर नहीं उतरते।

इस दौर में एक तरफ तो राजनैतिक दलों की पोल-पट्टी उजागर हो रही थी, तो दूसरी ओर आम कश्मीरी को समझ में आने लगा था कि जिस अनुच्छेद 370 को उनके जीवन-मरण का प्रश्न बताया जाता था उससे आम लोगों के जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता है। उसका बुरा प्रभाव सिर्फ उन नेताओं पर पड़ रहा है, जिनके पास राजनैतिक ताकत होती थी। इसी अनुच्छेद 370 के कारण वे बरसों से अरबों-खरबों की काली कमाई कर पा रहे थे। आम कश्मीरी को यह भी समझ में आने लगा था कि अनुच्छेद 370 वास्तव में उनके विकास को रोकने का साधन था न कि उनके लाभ वाला प्रावधान था।

देखते ही देखते कश्मीर बदलने लगा। सीमा पर सरकार की सख्ती के कारण विदेशी आतंकियों की घुसपैठ रुकी। साथ ही राजनैतिक दल की आड़ में आतंकियों को प्रश्रय देने वाले दलों पर शिकंजा कसा गया, उनकी फण्डिंग रुकी, तो पत्थरबाजी भी बीते वक्त की बात हो गई। देखते ही देखते कश्मीर में पर्यटकों की संेया बढ़ने लगी और उसका सीधा-सीधा फायदा आम कश्मीरियों को मिलने लगा। उनके जीवन स्तर में सुधार आने लगा। महज साढ़े चार सालों में आज कश्मीर पूरा बदल चुका है। वहां सिनेमाघर खुल चुके हैं। पर्यटकों की संख्या नए रेकार्ड कायम कर रही है। फिल्मों की शूटिंग के लिए फिल्मोद्योग से जुड़े लोग पहुँच रहे हैं। आम कश्मीरी अब पूरी तरह समझ गया है कि अनुच्छेद 370 उनके लाभ के लिए नहीं बल्कि उनके शोषण के लिए था।

यही वजह है कि आज आम चुनाव में भाजपा के नेता तो चुनौतियाँ दे रहे हैं कि कोई दल 370 वापस लाने का वादा करके दिखाए। लेकिन दूसरी तरफ सारे विपक्षी दल इस पर चुप्पी साधे हुए हैं। वे जानते हैं कि अगर उन्होंने कोई ऐसी बात मुँह से निकाल दी तो देश के पहले से नाराज मतदाता और ज्यादा भड़क जाएंगे। इतना ही नहीं कश्मीर के दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों को भी इसका एहसास है। उन्हें यह भी पता है कि अब आम कश्मीरी भी 370 की वापसी नहीं चाहता। इसीलिए वे भी चुप्पी साधे बैठे हैं।

कुल मिलाकर यही वो वजह है जो इस बार भाजपा को 370 सीटें हासिल करने का आत्मविश्वास दे रही है। कश्मीर सहित पूरा देश यह तो बता चुका है कि अनुच्छेद 370 हटने से पूरा देश खुश है। अगर चुनाव के नतीजे भी इसी दिशा में जाते हैं, तो यह भी प्रमाणित हो जाएगा कि मतदाता मोदी को पुरस्कृत करने को तैयार हैं।

राष्ट्र के समक्ष चुनौतियाँ और समाधान - मतदान

डॉ. सुब्रतो गुहा

सनातन हिन्दू धर्म के जन्मस्थान पुण्यभूमि भारत में आज राष्ट्र और सनातन धर्म के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं - भारत की सीमा से बाहर के एवं भारत की सीमा के अन्दर के राष्ट्र विरोधी तत्वों का एक गठजोड़ बन चुका है। एक ओर जहाँ भारत के टुकड़े-टुकड़े कर उसका अस्तित्व मिटाने का षड्यंत्र चल रहा है, वहीं दूसरी ओर सनातनधर्मी हिन्दुओं को जातियों में बाँटकर उन्हें कमजोर करने का षड्यंत्र जारी है।

दिनांक 9 फरवरी 2016 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली में सन् 2001 के संसद हमले के गुनाहगार अफजल गुरू (जिसे सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर 2013 में फाँसी दी गई थी) - उसकी बरसी पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर विश्वविद्यालय के वामपंथी छात्रों ने नारा लगाया - **भारत तेरे टुकड़े होंगे - इन्शा अल्लाह, इन्शा अल्लाह** उसके बाद जिहादी आतंकियों के समर्थन में कोलकाता के जाधवपुर विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय इत्यादि अनेक शैक्षणिक परिसरों में सभाएँ आयोजित हुई और हजारों विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भारत के विनाश के लिए और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों के पक्ष में नारेबाजी की। आसानी से समझा जा सकता है कि आतंकियों के पक्ष में नारेबाजी करने वाले यह तथाकथित भारतीय नागरिक भारत को बर्बाद करने के षड्यंत्र में लिप्त तत्वों के सक्रिय सहयोगी हैं।

भारत में उग्र वामपंथी नक्सलवादी एवं माओवादी भारतीय सुरक्षाबलों के साथ निरन्तर संघर्ष करते हैं, हिंसक वारदातें करते हैं तथा चिन्ताजनक तथ्य यह है कि आज भारत के छत्तीस जिले उग्र वामपंथी नक्सली और माओवादी हिंसा से प्रभावित हैं एवं भारतीय महानगरों में ऐसे हजारों पढ़े-लिखे माओवादी सहयोगी हैं जिन्हें अर्बन नक्सल कहा जाता है। साथ ही पाकिस्तान प्रायोजित जिहादी आतंकियों को गोपनीय रूप से सहयोग करने वाले भारतीय नागरिक गाँवों और शहरों में मिल जाएंगे जिन्हें स्लीपर सेल कहा जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था को खोखला करने का षड्यंत्र केवल कालाबाजारी, जमाखोरी और भ्रष्टाचार करने वाले ही नहीं कर रहे हैं बल्कि नकली नोट चलवाने वाले भी कर रहे हैं। पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित कर भारतीय संस्कृति पर प्रहार जारी हैं। जिहादी मुस्लिम युवकों द्वारा प्रेमजाल रूपी लव जिहाद में उलझाकर हिन्दू युवतियों का यौन उत्पीड़न और धर्मान्तरण का कुचक्र भी निरन्तर जारी है। नशे के सौदागर राष्ट्र के युवाओं का भविष्य नष्ट कर रहे हैं।

भारतीय लोकतंत्र आज ऐसे अनेकानेक षड्यंत्रों और चुनौतियों का सामना कर रहा है जिससे राष्ट्र एवं हम सभी राष्ट्रवासियों को गंभीर खतरा है। परन्तु यदि हमारे देश में एक स्थायी एवं मजबूत सरकार हो, जो हमारी सनातन संस्कृति की रक्षा हेतु प्रतिज्ञाबद्ध हो, तो सभी षड्यंत्रों और चुनौतियों का सफलतापूर्वक प्रतिकार किया जा सकता है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें जनता ही देश की भाग्य विधाता है क्योंकि देश में सरकार को बनाने या सरकार को गिराने की शक्ति नागरिकों अर्थात् मतदाताओं के हाथ है।

अभी लोकतंत्र का महोत्सव चुनाव चल रहा है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि संविधान द्वारा दिए गए मताधिकार के दायित्व को निभाए और एक जागरूक नागरिक के रूप मे राष्ट्रहित में मतदान करें। हमें याद रखना है कि हमारा सूझबूझ से किया गया मतदान राष्ट्रभक्त योग्य उम्मीदवारों को जितवाकर राष्ट्र एवं समाज का वर्तमान एवं भविष्य संवार सकते हैं। इसलिए राष्ट्र के समक्ष समस्त चुनौतियों का एकमात्र समाधान

सूझ-बूझ पूर्वक मतदान - और सुनहरा भविष्य निर्माण।

एक आदर्श प्रभु श्री राम

अमित राव पवार

वर्तमान समय में जब परिवार बिखर रहे है, भाई-भाई से अलग हो रहे हैं, मनुष्य अपना धैर्य-संयम खोता जा रहा है, पुत्र माता-पिता के आदेश का पालन करता दिखाई नहीं दे रहा। युवा संघर्षो से घबरा कर गलत रास्तों पर जा रहे हैं, मित्रता भी स्वार्थपूर्ण होती जा रही है।

इन सब बातों से ऊपर उठते हुए एक आदर्श व्यक्तित्व हमारे सामने नजर आते हैं और वे हैं प्रभु श्रीराम के रूप में। जब बात आदर्श की हो तब सबको भगवान श्रीराम ही दिखते हैं। आज परिवारों में भाई से भाई का प्रेम कहीं नजर नहीं आ रहा। श्रीराम से यहां हम सीख सकते हैं कि किस प्रकार उन्होंने व उनके भाइयों ने अपने संपूर्ण जीवन में अपने आपसी बंधुत्व का परिचय दिया।

जीवन में मनुष्य इतना भाग-दौड़ कर रहा है कि वह अपने स्वभाव, चिढ़चिढ़ेपन से रिश्ते खत्म कर रहा है। धैर्य, संयम कैसे जीवन में लाया जा सकता है, ये भगवान श्रीराम से सीखना चाहिए, संतानें अपने माता-पिता के आदेश का पालन नहीं कर पा रही हैं। ऐसे में माता-पिता के आदेश और आज्ञा का उल्लंघन ना हो यह भी प्रभु श्रीराम हम सबको सिखा रहे हैं। युवा संघर्ष से कतरा रहा, श्रीराम ने वनवास जो कि एक संघर्षमय जीवन को वरदान साबित करते हुए 14 वर्षों के संघर्ष के बाद राजा राम से मर्यादित प्रभु श्रीराम बन गए।

यह संघर्ष मनुष्य को अपने जीवन में निखारने का काम करता है। जल्द सफलता पाने के लालच में युवा आज इस संघर्ष कठिनाइयों से घबराकर गलत रास्ते पर जा रहा है। मित्रता में आज स्वार्थ की भावना आ गई है। बिना मतलब के मित्र-मित्र के काम नहीं आ रहा ऐसे में मित्रता का भाव राम, हनुमान, विभीषण, निषादराज, सुग्रीव से सीखना चाहिए। जिन्होंने हर समय निःस्वार्थ भाव से मित्रता के भाव को अपनाते हुए एक-दूसरे की सहायता की। अनेक ऐसी बातें हमारे राम में समाहित हैं जो उन्हें आदर्श बनाती हैं। मर्यादित हैं राम तो गरिमा है सीता। घर में महिलाओं का आचरण भी सीता समान होना आवश्यक है। आज परिवारों का विघटन होता जा रहा है, कारण यही है कि आपसी यकीन, भरोसा, विश्वास कम होता जा रहा है। इससे रिश्ते में दूरियां बनने के साथ परिवार की मर्यादा गरिमा को समाप्त होते हम देख रहे हैं। ऐसे में भगवान राम का अनुसरण हर एक मनुष्य तथा परिवार को करना चाहिए।

शास्त्रों में, ग्रन्थों में, वेदों में कहा भी गया है राम से बड़ा राम का नाम, जो इस कलयुग के भवसागर से मनुष्य को आसानी से पार लगा सकता है। राम में इतना आदर्श है कि महान होने पर भी उन्होंने सहायता के लिए केवट को छोटा नहीं माना यही बात राम को प्रभु श्रीराम बनाती है। भगवान विष्णु के सातवें अवतार के रूप में त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ और माता कौशल्या के यहां जन्मे हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम को हम प्रणाम करते हैं।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर

स्वर्णिका भाटी

यह एक चलचित्रीय रत्न है जो भारत के सबसे प्रभावशाली क्रांतिकारियों में से एक **वीर सावरकर** के जीवन का विवरण बड़ी सावधानी से छायांकित करता है। यह फिल्म रणदीप हुड्डा द्वारा निर्देशित और अभिनीत है, जो कथानक और प्रदर्शन के क्षेत्र में एक अद्वितीय गुरुत्वाकर्षण है।

फिल्म का प्रारंभ ही दर्शकों को अपनी सत्यता और ऐतिहासिक सटीकता के साथ बांधने लगता है। सावरकर के हर अध्याय को ध्यानपूर्वक और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिससे उनकी वह महत्वपूर्ण भूमिका प्रकट होती है जिसने ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी के लिए भारतीयों को प्रेरित करने में निरंतर योगदान दिया था।

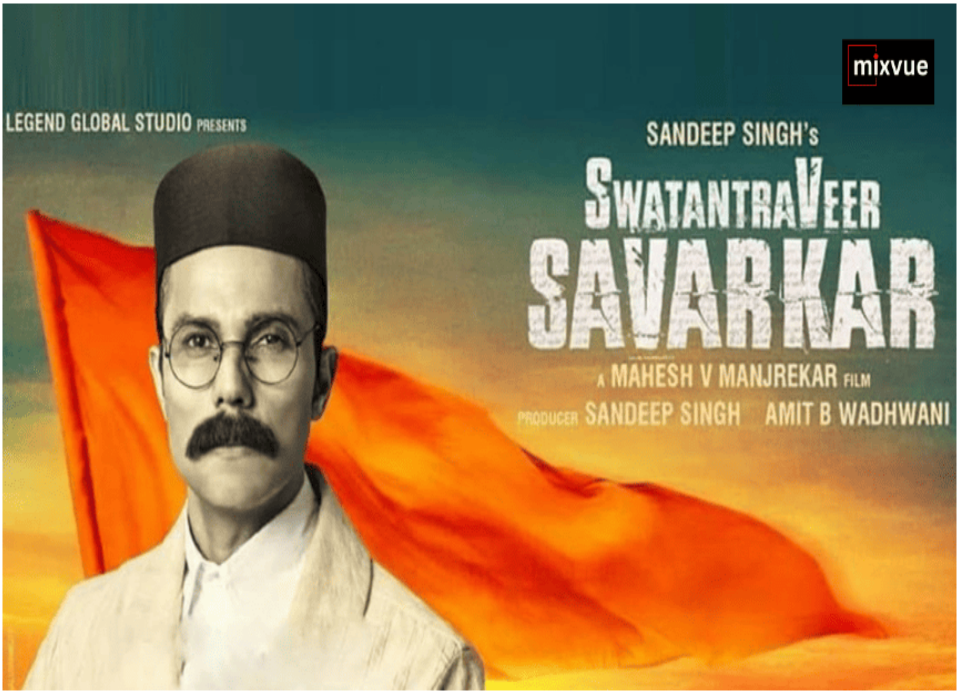

रणदीप हुड्डा का वीर सावरकर के तौर पर अभिनय निराला है। वह किरदार को इतनी पूर्णता के साथ व्यक्त करते हैं कि हुड्डा का अंत कहाँ है और सावरकर कहाँ शुरू होता है, इसे विश्वसनीय रूप से अलग करना मुश्किल हो जाता है। उनकी इस भूमिका के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार का पात्र होना प्रतीत होता है।

हुड्डा न केवल एक कलाकार के रूप में उत्कृष्ट हैं, बल्कि वह अपने निर्देशन में भी प्रशासन का प्रदर्शन करते हैं। उनकी कथानक बातों को मनोरंजनात्मक और मोहक बनाती है, जो दर्शकों को सावरकर की दुनिया में खींचती है और देशभक्ति की गहरी भावना को उत्पन्न करती है।

सहायक दल की उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सराहना की जानी चाहिए, जो हुड्डा की सावरकर की भूमिका को बिना किसी संबंध के पूरक करते हैं। विशेष रूप से, फिल्म के तकनीकी पहलू, संवाद और बैकग्राउंड संगीत, श्रेय देने योग्य हैं, जो कथानक को गहराई और वास्तविकता प्रदान करते हैं।

स्वातंर्त्यवीर सावरकर केवल एक फिल्म नहीं है; यह एक प्रकाशन है। यह भ्रांतियों को चुनौती देता है और भारत की स्वतंत्रता की असली साहित्य की ओर प्रकाश डालता है। उस समय जब ऐतिहासिक कथाएँ अक्सर राजनीतिक लाभ के लिए विरोधीकृत होती हैं, यह फिल्म सत्य की प्रकाशक के रूप में काम करती है, दर्शकों को सावरकर की विरासत और देश के स्वतंत्रता के पथ पर निरंतरता की एक नई दृष्टिकोण प्रदान करते हुए।

फिल्म की कमाई देखें तो 17.75 करोड़ हुई है जो कि आशा से बहुत कम है इससे यह पता चलता है कि आज का युवा आज भी मसालेदार फिल्म ही पसंद करता है।

कुल मिलाकर, **स्वातंर्त्यवीर सावरकर** सभी उम्र के दर्शकों के लिए देखने योग्य है। यह न केवल एक महान क्रांतिकारी की विरासत का सम्मान करती है, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता के लिए अनगिनत व्यक्तियों द्वारा दिए गए बलिदान को याद दिलाने का भी एक संदेश है।

श्री राम का सूर्याभिषेक

वैदिक सावल

रामनवमी हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। इस दिन भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था। भगवान राम ने अपनी अनसुनी लीलाओं, महान कर्मों और प्रभुत्व द्वारा विश्व को प्रभावित किया। इस खास दिन पर श्री रामचंद्र जी, जिन्हें हमारे रामलला जी भी कहा जाता है, सूर्य तिलक करते हैं। यह सूर्य तिलक उनके मस्तिष्क पर लगाया जाता है, जो उनकी दिव्यता को प्रकट करता है और उनके चेहरे की रौशनी बढ़ाता है।

सूर्य तिलक का प्रयोग हमारे पूर्वजों की पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं में होता रहा है। श्री रामलला के सूर्य तिलक का महत्व, मान्यताओं के अनुसार एक विशेष ताकतवर और पवित्र प्रतीक के रूप में है। यह सूर्य तिलक श्री रामलला के अलावा उनके प्रेमी भक्तों द्वारा भी लगाया जाता है। यह तिलक ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर की आंतरिक शक्तियों का प्रतीक है।

सूर्य तिलक श्री रामलला के माथे पर स्थित होता है जो उनकी पवित्रता को चिह्नित करता है। यह तिलक श्री रामलला के मस्तक के ऊपरी हिस्से पर लगाया जाता है, जिसमें सूर्य चिह्न बनाया जाता है। इसका रंग पीला होता है, क्योंकि भगवान राम को पीला रंग विशेष रूप से प्रिय होता है। यह तिलक श्रीराम के और उनके परिवार के सदस्यों के माध्यम से उनका आध्यात्मिक संबंध प्रकट करता है। संपूर्ण देश में रामनवमी की धूम थी। अयोध्या में राम मंदिर में 17 तारीख को विशेष व्यवस्था की गई थी। दोपहर के समय श्री रामलला की मूर्ति के मस्तक पर सूर्य की किरण से अभिषेक किया गया। मंदिर प्रबंधन द्वारा विज्ञान का उपयोग कर 5.8 सेंटीमीटर प्रकाश की किरण के साथ रामलला का **सूर्य तिलक** किया गया। इस मौके पर 10 भारतीय वैज्ञानिकों की टीम राम मंदिर में तैनात थी। दोपहर 12 बजे से लगभग साढ़े तीन मिनट तक दर्पण या लेंस का उपयोग करके सूर्य की रोशनी को रामलला के माथे पर स्थिर रूप से स्थापित किया गया। विज्ञान की टीम ने इसके लिए अथक प्रयास किए थे।

रामनवमी पर श्री रामलला को किए जाने वाले सूर्य तिलक का महत्व इस विशेष दिन के आध्यात्मिक और धार्मिक प्रभाव को भी बढ़ाता है। श्री रामलला के सूर्य तिलक का मकसद उनका श्रेष्ठ, गुणी और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतीक होना है। यह उनके मनोबल, धैर्य, त्याग, धर्म के प्रतीक का कार्य करता है। यह तिलक श्री रामलला की अनंत शक्ति और करुणा को प्रकट करने का एक माध्यम है।

इस उत्सवी दिन पर, श्री रामलला के सूर्य तिलक को धारण करने के लिए उनके भक्तों की आंतरिक शक्ति, मनोवृत्ति और आनंद को बढ़ाया जाता है। यह तिलक उनकी अद्भुत शक्ति है, जो सबको अनुग्रह और आनंद से भर देती है। श्री रामलला के सूर्य तिलक को प्राप्त करने वाले लोगों को आनंद और प्रभुत्व की अनुभूति होती है और यह उन्हें मनोवैज्ञानिक तौर पर सशक्त बनाता है।

समाप्ति के रूप में, रामनवमी पर श्री रामलला द्वारा किया जाने वाला सूर्य तिलक एक धार्मिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो भगवान श्रीराम के प्रेरणा से की जाती है।

भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्रव्यापी अनवरत जन अभियान

भारत में कृषि भूमि के घटते कार्बन स्तर और बंजर होती जा रही धरती को बचाने के लिये देश की प्रमुख संस्थाओं ने वर्ष 2021 में सामूहिक रूप से भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र तरीय जन अभियान चलाया था। इस जन अभियान में कृषि एवं पर्यावरण क्षेत्र में कार्यरत सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों से भारत के हजारों गांवों में भूमि पूजन कार्यक्रमों के माध्यम से भूमि सुपोषण एवं संरक्षण कार्य को बढ़ावा मिला। इससे बडी संख्या में किसान भूमि के प्रति जाग्रत होकर रसायन मुक्त खेती की ओर अग्रसर हुये हैं।

कृषि एवं पर्यावरण क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने अनेक बार चिन्ता व्यक्त की है कि खेती की भूमि का भौतिक, रसायनिक और जैविक संतुलन बिगडता जा रहा है तथा जमीन में बढते प्रदूषण के कारण आगामी कुछ वर्षों में उत्पादन पर विपरीत प्रभाव संकट के रूप में सामने होगा। भूमि का जैविक कार्बन न्यूनतम आवश्यकता से बहुत नीचे आ गया है। अतः देश हित में और किसान हित में संस्थाओं ने भूमि सुपोषण के माध्यम से सकारात्मक बदलाव का बीडा उठाया है।

प्रमुख रूप से गायत्री परिवार, पतंजलि योगपीठ, रामकृष्ण मिशन, इस्कान, श्री रामचंद्र मिशन, श्री सिद्धगिरि मठ, पीराना पीठ, स्वदेशी जागरण मंच, भारतीय किसान संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिन्दू परिषद्, सहकार भारती, विद्या भारती, एकल विद्यालय, राष्ट्रीय सेवा भारती, सावयव कृषि परिवार, ग्राम भारती, लोक भारती, ग्राम विकास, गोसेवा, पर्यावरण गतिविधि, दीनदयाल शोध संस्थान, एकलव्य ग्रामीण फाउंडेशन, बंसी गीर गोशाला, यूथ फौर नेशन आदि अनेक ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं ने मिलकर तय किया है कि यह अभियान भूमि के उत्पत्ति दिवस

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होकर अनवरत चलता रहेगा और देवोत्थान एकादशी तक भूमि पूजन, इत्यादि कार्यक्रम होंगे। अभियान में समन्वय का कार्य अक्षय कृषि परिवार के द्वारा किया जायेगा।

अक्षय कृषि परिवार के नवल जी रघुवंशी समन्वयक ने बताया कि देश की अनेक संस्थाओं के साथ-साथ हजारों गोशालाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विज्ञान केन्द्रों से संपर्क कर अभियान में सहभागी होने का आह्वान किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत भूमि पूजन, भूमि सुपोषण करने वाले कृषकों का सम्मान, भूमि सुपोषण प्रयोगों के प्रशिक्षण, संगोष्ठी, कार्यशालायें, जागरूकता शिविर, प्रदर्शनी, आदि आयोजित की जायेंगी। नगरीय क्षेत्रों में जैविक-अजैविक अपशिष्ट को अलग रखना, जैविक अपशिष्ट से खाद बनाना आदि गतिविधियों हेतु जागरण कार्यक्रम चलाये जायेंगे। भूमि सुपोषण से संबंधित विविध साहित्य वेबसाइट www.bhumisuposhan.org पर उपलब्ध है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

चलो, खोज निकालें...!

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के बारे में कुछ सवाल पूछे गए हैं। उनके उत्तर चौखाने में फंसे हैं। उन्हें ढूंढिए

1. भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कहां हुआ था?
2. भगवान श्रीकृष्ण वासुदेव और देवकी की कौन सी वीं संतान थे?
3. भगवान श्रीकृष्ण के अत्याचारी मामा का नाम क्या था?
4. पिता वासुदेव ने भगवान श्रीकृष्ण को कौन सी नदी पार कर गोकुल में पहुंचाया था?
5. भगवान श्रीकृष्ण की पालक माता का नाम क्या था?
6. भगवान श्रीकृष्ण दूध पीते बालक थे, तब उन्हें मारने के लिए कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी का नाम क्या था?

म	थु	रा	रा	गो	र	खा	का
पा	चा	व	ल	औं	मा	य	ठ
ल	ग	म	णि	पू	कं	मु	मां
र	मा	दू	त	बे	स	ना	डू
मा	उं	ट	ए	व्ह	रे	स्ट	ग
दे	मी	शि	उ	डी	सा	जी	य
आ	ठ	वी	दे	व	पा	क	शो
पा	शु	पू	त	ना	थ	व	दा

उत्तर - मथुरा, आठवां, कंस, यमुना, यशोदा, पूतना

नीचे एक कहावत का अर्थ दिया है। वह कहावत आकृति में दिए गए अक्षरों में छिपी है। कहावत पहचान कर लिखें।

उत्तर - घाट-घाट का पानी पीना

पूर्ण हुआ वनवास

कवि राहुल शर्मा (उज्जैन)

पूर्ण हुआ वनवास राम का फिर दिवाली आई है।
मां कौशल्या की आंखों में फिर खुशहाली छाई है।
अंधकार का वक्ष चीरकर देखो सूरज निकला है।
भारतीय परिधान ओढ़कर देखो जन-गण निकला है।
बरस पांच सौ बाद धरा पर फिर से शुभ दिन आया है।
बड़े दिनों के बाद अवध में केसरिया लहराया है।

पतझड़ बीत गया हरियाली ने फिर दस्तक दे डाली।
गंदी जिह्वा मौन हुई जो देती थी प्रतिपल गाली।
रामराज्य का उदय हुआ है आर्यावर्त के आंगन में।
रामनाम की गूंज उठी पूरे भारत के जीवन में।
सभी गिलहरी बनकर आए रामदूत मैदान में।
ताकत दुनिया को दिखला दी कलयुग के हनुमान ने।।

यह मंदिर गंगा-सरयू के पावन जल की धारा है।
पुरखों ने जो देखा था वो प्यारा स्वप्न हमारा है।
पंपापुर में मां शबरी के नयनों की यह आशा है।
घायल पड़े जटायु के मन की सच्ची अभिलाषा है।
यह मंदिर तो शिलालेख है सनातनी सच्चाई का।
विजय तिलक है श्रीराम पर तुलसी की चौपाई का।
इस मंदिर की खातिर तो अपना सर्वस्व समर्पण है।
यह मंदिर तो कारसेवकों का एक पावन तर्पण है।।

इस निर्णय ने आशाओं का सूरज एक उगाया है।
हर भारतवासी का सोया स्वाभिमान जगाया है।
इस निर्णय ने धारा दी है अब आगे क्या करना है।
रामकाज को अपना पूरा जीवन अर्पित करना है।
सदियों से जो वंचित था वो काम नेक कर डाला है।
साठ साल से बिखरा हिंदू पुन: एक कर डाला है।।

गर्भ गृह में श्रीरामलला के साथ स्वर्णाक्षरों वाली रामायण के भी दर्शन

अयोध्या- स्वर्णाक्षरों से लिखने की बात केवल मुहावरा नहीं रही, इसे वास्तव में कर दिखाया है एक पूर्व आईएएस अधिकारी और उनकी धर्मपत्नी ने. इनके अथक प्रयास से ताम्रपत्र पर उकेरे सोने के अक्षरों वाली रामायण को श्रीरामलला के साथ गर्भ गृह में रखा गया है।

विनम्र श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक - सन 1975-77 के आपातकाल में रतलाम के जिला प्रचारक रहे, संघ के जिले से लेकर प्रांत तक के विभिन्न दायित्व का निर्वहन कर चुके वरिष्ठ प्रचारक श्री बालमुकुंद जी झा का 78 वर्ष की आयु में निधन का समाचार सभी स्वयंसेवकों के लिये दुखदायी है।

विश्व संवाद केन्द्र मालवा परमपिता परमेश्वर से आपके मोक्ष की प्रार्थना करता है। - विनम्र श्रद्धांजलि

चंद्रयान: भारत का अद्भुत अंतरिक्ष मिशन

भारत ने अंतरिक्ष अन्वेषण में एक नया मील का पथ प्रस्थापित किया जब उसने 2008 में चंद्रयान-1 मिशन की शुरुआत की। इस मिशन के माध्यम से भारत ने चंद्रमा की उत्तरी पोल की तलाश की, जो अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम था। चंद्रयान-1 में चंद्रमा की सतह का अध्ययन किया गया और अंतरिक्ष यान के माध्यम से उसकी छवियाँ और डेटा प्राप्त किए गए। इसमें मोबाइल रोबोटिक उपकरण भी थे, जिनसे वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। यह मिशन भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ और देश को विश्व में अंतरिक्ष अनुसंधान में मान्यता प्राप्त करवाई।

इसके बाद, भारत ने 2019 में चंद्रयान-2 मिशन को शुरू किया। इस मिशन में भारत ने पहली बार चंद्रमा के सतह पर साइंटिस्ट भेजने का प्रयास किया। चंद्रयान-2 में चंद्रमा की सतह पर भारतीय रोवर **प्रग्यान** को भी भेजा गया, जो चंद्रमा की सतह की जांच करने के लिए निर्मित किया गया था।

चंद्रयान-2 मिशन का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा के उत्तरी पोल की छानबीन और उसके भौतिक संरचना का अध्ययन करना था। यह मिशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ और देश को वैश्विक मंच पर उच्चतम स्तर के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में स्थान दिया।

चंद्रयान मिशन ने भारत की अंतरिक्ष शक्ति और क्षमता को साबित किया है, और यह देश के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें न केवल वैज्ञानिक अध्ययन का विकास हुआ है, बल्कि यह देश की गरिमा को भी बढ़ावा दिया है।

लोकतंत्र के महापर्व में मतदान अवश्य करें

वोट जैसा कुछ नहीं वोट
जरूर डालेंगे हम
NVD2024

रामलला का सूर्य तिलक

जून माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 05 विश्व पर्यावरण दिवस

ता. 09 बिरसा मुण्डा शहीदी दिवस

ता. 10 विनायकी चतुर्थी व्रत

ता. 16 गंगा दशहरा

ता. 18 रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस

ता. 24 रानी दुर्गावती बलिदान दिवस

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341